गौतम बुद्ध महाविद्यालय

सम्बद्ध-सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

पचपेड़वा, सांगठ, संतकबीर नगर (उ.प्र.)

(शिक्षा संकाय)

बी.एड द्विवर्षीय पाठ्यक्रम (प्रथम वर्ष)

शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्धन

सत्र : 2025-2026

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका का नाम सुन्दरी

शिक्षण विषय (शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्धन)

महाविद्यालय अनुक्रमांक

विश्वविद्यालय द्वारा आवंटित अनुक्रमांक

शैक्षिक प्रशासन और प्रबन्धन के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए ? POSDCORB सिद्दान्त के विशेष संदर्भ में शैक्षिक प्रशासन के कार्यो का विश्लेषण कीजिए ?

शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्धन में अन्तर :-

प्रशासन तथा व्यवस्थापन को समानार्थी रूप में प्रयुक्त किया जाता है। प्रायः शिक्षा - प्रशासन (Education Administration) के लिए शिक्षा - व्यवस्थापन (Educational Mangement) और शिक्षा - प्रशासन (Educational Administration) के लिए शिक्षा - व्यवस्थापन (Educational Mangement) का प्रयोग करते हैं।

परन्तु 'प्रशासन' और 'व्यवस्थापन' में सूक्ष्म अन्तर है। इस अन्तर को निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया गया है।

प्रशासन	प्रबन्धन या व्यवस्थापन
1. प्रशासन एवं एक साधन है जो नीतियों तथा मार्गदर्शक सिद्धान्तो का निर्धारण करता है।	1. व्यवस्थापन वह साधन है जिसका सम्बन्ध संचालको या गवर्नरों के बोर्ड द्वारा निर्धारित उद्देश्यों एंव लक्ष्यों की प्राप्ति से है।
2. प्रशासन यह पदावली (Term) है जिसका प्रयोग सार्वजनिक मामलो कानून तथा व्यवस्था नागरिक संस्थाओं आदि के प्रशासन के लिए किया जाता है।	2. 'व्यवस्थापन' वह साधन है जिसका नामक पदावली का प्रयोग कम्पनी, कारखाने, फर्म आदि के संचालन के लिए किया जाता है।
3. प्रशासन के परिणाम आसानी से नहीं मापे जा सकते हैं।	3. व्यवस्थापन के परिणामों को सुविधापूर्वक मापा जा सकता है।

4. प्रशासन नियमो पर बल देने के कारण कठोर तथा परम्परागत होता है।	4. व्यवस्थापन परिणामों पर बल देने के कारण प्रगतिशील- नवीनतम (Innovative) तथा कल्पनाशील (Imaginative) होता है।
5. प्रशासन नियमों तथा विनियमों से सम्बधित है। इसमें कागजी कार्यवाही पर अधिक बल दिया जाता है।	5. व्यवस्थापन नामक उद्देश्यों एवं लक्ष्यों से सम्बांधित है। इस कारण इसमे परिणामों (Results) पर अधिक बल दिया जाता है।
6. प्रशासन एक प्रक्रिया है जो निर्णयों से सम्बंधित है जिसमें नियोजन, संगठन, कर्मचारियों की नियुक्ति, संचालन समन्वय, प्रतिवेदन लेखन, बजट बनाना तथा मूल्यांकन से संबंधित क्रियाएँ निहित है।	6. व्यवस्थापन भी एक प्रक्रिया है जो निर्णयों से संबंधित है जिसमे नियोजन, संगठन, कर्मचारियों की नियुक्ति, संचालन, समन्वय, प्रतिवेदन लिखना, बजट बनाना तथा मूल्यांकन से संबंधित क्रियाएँ निहित है।
7. प्रशासन का सम्बन्ध भौतिक तथा मानवीय प्रयासो के समन्वय से है।	7. व्यवस्थापन का सम्बन्ध व्यक्ति तथा वस्तु दोनों से है।

शैक्षिक प्रशासन और प्रबन्धन के सन्दर्भ में POSDCORB सिद्धान्त।

लूथर गुलिक द्वारा प्रतिपादित POSDCORB (पोस्डकॉर्ब) थ्योरी के अनुसार, शैक्षिक प्रशासन के प्रमुख कार्य योजना (Planning), संगठन (Organizing), कर्मचारी व्यवस्था (Staffing), निर्देशन (Directing), समन्वय (Coordinating), प्रतिवेदन (Reporting) और बजट (Budgeting) विद्यालय के सुचारु संचालन, यह सिद्धांत संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग और शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सात आवश्यक चरण प्रदान करता है।

POSDCORB के अनुसार शैक्षिक प्रशासन के कार्य :—

- P- Planning (योजना) :— प्राप्त किए जाने वाले उद्देश्यों और उन्हें प्राप्त करने के तरीको की रूपरेखा तैयार करना।
- O- Organizing (संगठन) :— कार्य, विभाजन, अधिकार संरचना और सुचारु संचालन के लिए तैयार करना।

शैक्षिक प्रशासन कार्यों का विश्लेषण :—

विभिन्न विचारकों द्वारा बताये गये कार्यकलापों को संश्लेषित और विश्लेषित करने पर शिक्षा की प्रशासनिक प्रक्रिया में निम्नलिखित कार्यों को सम्मिलित किया जा सकता है।

1. निर्णयन 2. नियोजन 3. संगठन करना 4. सम्प्रेषण 5. निर्देशन करना 6. समन्वय 7. रिपोर्ट तैयार करना 8. बजट बनाना 9. मूल्यांकन

1. निर्णयन (Decision making) :— सभी संगठनों मे किसी कार्य के सम्पादन या क्रिया के आयोजन के समंध सम्बंध मे निर्णय करना होता है।

(i) उद्देश्य व लक्ष्यों का स्पष्ट ज्ञान।
(ii) विश्लेषण तथा निर्णयन के आधार पर उपलब्ध विकल्पों का चयन करना।

2. नियोजन (Planning) :— नियोजन का समन्वय अर्थ किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए किए जाने वाले कार्य उनकी कार्य प्रणाली और सहयोगी व्यक्तियों एवं परिस्थितियों तथा सहायक व वस्तुओं की एक सारगर्भित रूपरेखा बनाना है।

(i) उद्देश्य - निर्धारण के उपरान्त उसकी पूर्ति के लिए जाने वाले कार्यों की विस्तृत सूची बना लेनी चाहिए।
(ii) इन प्रविधियों के निर्धारण के उपरान्त उसके कार्यान्वयन में सहायक सामग्री का चयन एवं वर्गीकरण किया जाना चाहिए।

3. संगठन (Organization):— प्रशासन में संगठन मूलभूत कार्य है। जे० डी० सीयर्स का कहना है— यह कार्य करने की एक मशीन है जिसका निर्माण व्यक्तियों, वस्तुओं, धारणाओं, प्रतीकों स्वतन्त्र नियमों, सिद्धान्तों के द्वारा या प्रायः इन सबके संयोग से हो सकता है।
संगठन के स्वरूप दो प्रकार के होते हैं— प्रथम औपचारिक, द्वितीय औपचारिक। औपचारिक संगठन में कार्यकर्ता, सहायक, पर्यवेक्षक, अधिकारी आदि व्यक्तियों का एक पदानुक्रम होता है।

4. सम्प्रेषण (Communication):— सम्प्रेषण वह व्यवस्था है जिसमें आदेश, सूचनाएँ, विचार, प्रश्न आदि एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाये जाते हैं। शाला में सम्प्रेषण विद्युतीय होता है— 1. ऊपर से नीचे की ओर 2. समानान्तर, तथा, 3. नीचे से ऊपर की ओर।
शिक्षकों से प्राचार्य की ओर प्रेषित किये जाने वाले संदेश, विचार, मत, सुझाव आदि आते हैं। अतः सम्प्रेषण वह साधन है जिसमें संस्था या संगठन संगठित होता है।

5. निर्देशन करना (Direction):— निर्देशन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए जे० बी० सीयर्स ने लिखा है— प्रशासन में निर्देशन यह अंग है जो निर्णय को प्रभावित करता है। कार्य करने के लिए सूचना देता है तथा इस बात का भी संकेत देता है कि कार्य को किस प्रकार करना है और इसको कब प्रारम्भ एवं समाप्त करना है।

6. समन्वय स्थापित करना (Co-ordination):- प्रत्येक संगठन में दो प्रकार के समाधान जुड़े होते है- भौतिक संसाधन तथा मानवीय संसाधन। भौतिक संसाधनों में भवन, उपकरण, साज-सज्जा आदि आते हैं। इन संसाधनों के उचित समन्वय के प्रशासन श्रम एवं शक्ति दोनों के अपव्यय एवं पारस्परिक संघर्ष को रोकता है।

7. रिपोर्ट तैयार करना (Repoarting):- शिक्षा प्रशासन की प्रक्रिया में रिपोर्ट तैयार करने का भी अपना महत्व है। शिक्षा-प्रशासन को संगठन के सम्पूर्ण कार्य का अवलोकन करके उसके सम्बंध में रिपोर्ट तैयार करनी चाहिए।

8. बजट बनाना (Budgeting):- बजट बनाने के अर्थ को स्पष्ट करते हुए डॉ. आर. सी. शर्मा ने लिखा है कि शैक्षिक आवश्यकताओं को सूची बनाना तथा उन वित्तीय पदों में अनुवादित करना ही बजट बनाना कहलाता है।

9. मूल्यांकन (Evaluation):- मूल्यांकन भी प्रशासन की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण तत्व है। मूल्यांकन द्वारा हमे इस बात का ज्ञान होता है कि हमने निर्धारित उद्देश्यो की प्राप्ति किस सीमा तक की है।
मूल्यांकन के आधार पर हम अपने आगे के उद्देश्यों एवं विधियों का निर्धारण कर सकते हैं।

प्रशासन एक गतिशील प्रक्रिया है। इसलिए इसमें निरन्तर प्रगति होनी चाहिए। प्रगति के लिए हमें अपने संगठन या संस्था को सर्वोत्तम स्वरूप प्रदान नहीं कर सकते हैं।

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षा-प्रक्रिया की समुचित व्यवस्था करना निहित है। इसके संचालन के लिए प्रशासन को प्रशासन प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों पर ध्यान देना परम-आवश्यक है।

यदि वह शिक्षा- प्रशासन की प्रक्रिया के इन स्तरों पर समुचित ध्यान नहीं देगा, तो वह प्रशासन में सफलता प्राप्त करने में असमर्थ रहेगा। साथ ही शिक्षा- प्रशासन की सफलता उसके नेतृत्व तथा निरीक्षण में दक्षता आदि गुणों पर भी निर्भर करती है।

चाहे उसकी योजना कितनी ही अच्छी क्यों न हो, जब वह उसको कार्यान्वित करने में अपने सफल नेतृत्व का परिचय नहीं देगा और उसका समय - समय पर निरीक्षण नहीं करेगा तब तक वह सफल नहीं हो सकेगी।

शैक्षिक पर्यवेक्षण की भूमिका: उद्देश्यों; और आवश्यकता पर प्रकाश डालें।

समकालीन शिक्षा प्रणाली के विशेष संदर्भ में शैक्षिक पर्यवेक्षण की चुनौतियो और उसके समाधान पर चर्चा करें।

शैक्षिक पर्यवेक्षण; भूमिका, उद्देश्य और आवश्यकता:-

आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रवृत्तियों, आन्दोलनों एवं विचारधाराओं का जन्म हुआ। परिणामस्वरूप शिक्षा की प्रकृति, उद्देश्य, पाठ्यक्रम विधियों आदि में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए।
इनमें आगे परिवर्तनो के साथ-साथ निरीक्षण की धारणा में भी परिवर्तन आया।
शिक्षाशास्त्रियों ने निरीक्षण सम्बन्धी नवीन धारणा को अभिव्यक्ति करने के लिए एक नवीन पद का प्रयोग किया जो परिनिरीक्षण (Supervision) नाम से प्रसिद्ध है।
केवल शब्दों का हेर-फेर नही है वरन इनमें उद्देश्य क्षेत्र विधि एवं दृष्टिकोण का भी अन्तर है।
'परिनिरीक्षण' की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए यहाँ कुछ विद्वानों के विचारो को अभिव्यक्ति किया जा रहा है।
आजकल परिनिरीक्षण केवल शिक्षक तथा छात्र के विकास पर ही बल नही देता है, वरन स्वयं परिनिरीक्षण-वर्ग, अभिभावकों तथा अन्य सामान्य लोगों के विकास को भी ध्यान से रखता है।
यह छात्र-समुदाय तथा संघ के प्रत्येक सदस्य की शारीरिक और सामाजिक कुशलता के विकास मे प्रत्यक्ष रुप से सम्बन्धित है।
यह उन तत्वों से भी सम्बन्धित है।
जो उनके विकास में अप्रत्यक्ष रुप से सहायक होते हैं।

"परिनिरीक्षण एक सेवा - कार्य है जो मुख्यतः निर्देश एवं उसकी उन्नति से सम्बन्धित है। यह प्रत्यक्ष रूप से शिक्षण तथा सीखने की प्रक्रिया और उन तत्वों से सम्बन्धित है जो इन प्रक्रियाओं में निहित एवं इनमें सम्बन्धित है।
ये तत्व - शिक्षक, छात्र, पाठ्यक्रम, निर्देश - सामग्री, स्थिति का सामाजिक एवं भौतिक वातावरण आदि हैं।"

"परिनिरीक्षण एक विशेष प्राविधिक सेवा है जो मुख्यतः उन दशाओं के अध्ययन एवं सुधार से सम्बन्धित है जो, छात्रों के विकास तथा सीखने की प्रक्रिया को आच्छादित करती है। विद्यालय पद्धति में प्रत्येक वस्तु विकास तथा सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रयोग में लायी जाती है।
परिनिरीक्षण उन बातों से सम्बन्धित है जो मुख्यतः तथा प्रत्यक्षतः विकास एवं सीखने की प्रक्रिया को सहज बनाती है।"

"परिनिरीक्षण एक उत्तम शिक्षण अधिगम परिस्थिति के विकास में सहायता देता है।

शैक्षिक पर्यवेक्षण की भूमिका :—

शैक्षिक पर्यवेक्षण (Supervision) शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक, प्रेरक और रचनात्मक सहयोगी के रूप में कार्य करते हैं, न कि केवल निरीक्षक (Inspector) के रूप में।
शैक्षिक परिवेक्षण शैक्षिक प्रशासन का महत्वपूर्ण अंग है। शैक्षिक पर्यवेक्षण के उद्देश्य प्रारूप, सामाजिक व्यवस्था के साथ-साथ शिक्षा की कुछ प्रणालियाँ भी होती हैं।
इस सहायक प्रणाली के द्वारा शैक्षिक पर्यवेक्षण को प्रभावी बनाया जाता है।

शैक्षिक पर्यवेक्षण के उद्देश्य :—

शैक्षिक पर्यवेक्षण के द्वारा अग्रांकित उद्देश्यों की प्राप्ति के प्रयास किये जाते हैं —

1. शिक्षकों के सम्मुख शिक्षा के उद्देश्य, मूल्य तथा उपलब्धियों को सुनिश्चित तथा स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करना।
2. शिक्षकों की व्यावसायिक कुशलता में वृद्धि कर उनके शिक्षण को प्रभावकारी बनाना।
3. शिक्षकों को छात्रों तथा समाज की आवश्यकताओं से परिचित कराकर उनकी परिपूर्ति करने हेतु अध्यापकों को प्रोत्साहित करना।
4. शिक्षकों को उनकी योग्यता, शिक्षा तथा क्षमताओं के अनुसार कार्य विभाजन करना।

5. शिक्षकों को नवीनतम शैक्षिक विकासो से परिचित करना।

6. अप्रशिक्षित शिक्षकों को शिक्षण के आधारभूत सिद्धान्तों तथा प्रयोगों से परिचित करना।

7. शिक्षकों को समुचित समायोजन करने में सहायता देना।

8. शिक्षकों के व्यापक उद्देश्यों की पूर्ती हेतु विद्यालय में आवश्यक वातावरण तथा शिक्षण सुविधाएँ प्रदान करना।

- गुणवत्ता में सुधार :— शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को उन्नत करना।
- पेशेवर विकास :— शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण विधियों से अवगत कराना।
- समस्या निवारण :— शिक्षण में आ रही चुनौतियों की पहचान कर उनका समाधान करना।
- मूल्यांकन :— पाठ्यक्रम और शैक्षणिक गति-विधियों के कार्यान्वयन की जाँच करना।

शैक्षिक पर्यवेक्षण की आवश्यकता :—

- संवर्धन :—
  शिक्षा में निरंतर सुधार की संस्कृति को विकसित करना।

- मार्गदर्शक :—
  शिक्षकों को नैतिक समर्थन और प्रेरणा प्रदान करना।

- नवाचार :—
  बदलती तकनीक के साथ शिक्षा को जोड़ने से सहायता करना।

शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने हेतु पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धति, शिक्षण विधियाँ, उपकरण पाठ्यपुस्तकें आदि का समुचित समायोजन, संगठन एवं प्रयोग आवश्यक है।
शैक्षिक पर्यवेक्षण उत्तम शिक्षण प्राक्रिया में पूर्ण रूपेण सहायक होता है। अतः सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया को समृद्ध बनाने के लिए शैक्षिक पर्यवेक्षण की अत्यन्त आवश्यकता है। पर्यवेक्षण के द्वारा शैक्षिक क्रियायों की अनावश्यक आवृत्तियों को रोककर उनके अपव्यय को कम किया जा सकता है। इसलिए संपूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया को उन्नत बनाने के लिए पर्यवेक्षण की आवश्यकता होती है।

समकालीन शिक्षा प्रणाली में शैक्षिक पर्यवेक्षण की चुनौतियाँ :—

1. संसाधनों की कमी :— वित्तीय और तकनीकी संसाधनों की कमी।

2. कार्यभार की अधिकता :— शिक्षकों और पर्यवेक्षकों पर प्रशासनिक कार्यों का बहुत अधिक बोझ।

3. पारंपरिक दृष्टिकोण :— आज भी कई जगहों पर पर्यवेक्षण को 'निरीक्षण' या 'दोष खोजने' की प्रक्रिया माना जाता है।

4. तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव :— शिक्षकों में आईसीटी (ICT) उपकरणों का सही उपयोग न कर पाने की चुनौती।

5. सुचारू संचार का अभाव :— पर्यवेक्षकों और शिक्षकों के बीच संवाद की कमी।

शैक्षिक पर्यवेक्षण के चुनौतियों का समाधान :—

1. व्यावसायिक विकास :— पर्यवेक्षकों को समकालीन नेतृत्व और प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

2. लोकतांत्रिक दृष्टिकोण :— पर्यवेक्षण को सहयोगात्मक (Collaborative) बनाना चाहिए, न कि आधिकारिक।

3. संसाधन जुटाना :— विद्यालयों मे पर्याप्त तकनीकी और शैक्षणिक सामग्री सुनिश्चित करना।

4. नियमित कार्यशालाएँ :— शिक्षकों के लिए समय - समय पर प्रशिक्षण और कार्यशालाओं का आयोजन।

5. विद्यालय - आधारित पर्यवेक्षण :— स्कूल स्तर पर ही पर्यवेक्षण को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष :—

शैक्षिक पर्यवेक्षण का उद्देश्य केवल कमियां निकालना नहीं, बल्कि एक सहायक के रूप में शिक्षकों को सशक्त बनाकर शिक्षा के स्तर को उन्नत करना है।
समकालीन चुनौतियों से निपटने के लिए एक सहभागी और तकनीकी रूप से सक्षम पर्यवेक्षण प्रणाली अपरिहार्य है।